JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

सितंबर 2025

निर्बलता से कुचले हुए हो? जीवन से थके हुए हो?
शान्त रहे- क्योंकि परमेश्वर का

पुनर्जीवित वचन आपका जीवन रेखा है।

प्रस्तावना

मेरे प्रिय जवां दिलों,

यीशु मसीह के नाम में आपको प्यार भरा अभिवादन!

प्रभु की सेना के एक योद्धा के रूप में, आपके लिए उनके वचन की सामर्थ से बलवान होना अत्यंत आवश्यक है। प्रेरित यूहन्ना (1 यूहन्ना 2:14) में लिखते हैं, "हे जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने दुष्ट पर जय पाई है।" जिस प्रकार आप प्रार्थना को प्राथमिकता देते हैं, उसी प्रकार आपको परमेश्वर के वचन पर मनन करने और उसे अपने दैनिक जीवन में लागू करने के लिए भी समय निकालना चाहिए—क्योंकि परमेश्वर का वचन आपको पुनर्जागृत करता है, आपको आकार देता है, और आपको बल प्रदान करता है।

युवा यहोशू की सफलता का रहस्य यह था: "व्यवस्था की यह पुस्तक तुम्हारे मुख से न हटे" (यहोशू 1:8), यह परमेश्वरीय आज्ञा थी—और यहोशू ने पूरे मन से इसका पालन किया।

परमेश्वर के वचन ने ही यहोशू को पुनर्जागृत किया।

मूसा की मृत्यु के बाद, जब यहोशू नेतृत्व की भारी जिम्मेदारी से उलझन में और बोझिल होकर खड़ा था, तो प्रभु ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही तुम्हारे साथ भी रहूँगा। मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा, न ही त्यागूँगा।" ये वचन दिन-प्रतिदिन यहोशू को सहारा देते रहे और उसे अपनी बुलाहट को विजयी रूप से पूरा करने की सामर्थ प्रदान करते रहे।

जब इस्राएल को "ऐ" में हार का सामना करना पड़ा, और यहोशू निराशा में मुँह के बल गिर पड़ा, तो एक बार फिर परमेश्वर के वचन ने उसे ऊपर उठाया, उसे बल दिया और उसे ढाला। जब उसने छावनी को शुद्ध करने के परमेश्वर के आदेश का पालन किया, तो प्रभु की उपस्थिति और सुरक्षा लौट आई, जिससे उन्हें एक बड़ी विजय मिली। परमेश्वर के वचन से सामर्थ पाकर, यहोशू ने 31 राजाओं को हराया, कनान देश को विरासत में प्राप्त किया और उसे इस्राएल के गोत्रों में बाँट दिया।

आज भी, परमेश्वर का वचन न केवल आपके जीवन को पुनर्जागृति, आकार और सामर्थ प्रदान करेगा—यह आपको उठने, चमकने और उसकी सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

आपको, इस पीढ़ी के यहोशू को, परमेश्वर के लिए जोश से जलना चाहिए। आपको देश को सुसमाचार से भरना चाहिए। यहोशू की तरह, तुम्हें भी अपने पैरों के निशानों पर प्रभु का अधिकार जताना होगा।

दृढ़ और साहसी बनो!
प्रभु के वचन में बने रहो!
उसका सामर्थी हाथ तुम्हें बल देगा!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजरस

हिम्मत की जीत

प्रिय युवा उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं, आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन!

इस पृथ्वी पर हमें जो भी क्षण मिलता है, वह कुछ सार्थक हासिल करने का एक नया अवसर है। जीवन अनगिनत अवसर प्रस्तुत करता है—और जो लोग उन्हें पूरे हृदय से अपनाते हैं, वे महानता की ओर बढ़ते हैं। आज आपके सामने एक ऐसे ही व्यक्ति की कहानी है जिसने कठिनाइयों भरे जीवन को विजय की विरासत में बदल दिया।

लुईस हैमिल्टन का जन्म इंग्लैंड में एक साधारण मजदूर वर्ग के परिवार में हुआ था। छोटी उम्र से ही उन्हें कार्ट रेसिंग का गहरा शौक था। अपने बेटे के सपने को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित, लुईस के पिता ने एक साथ तीन नौकरियाँ कीं। मात्र आठ साल की उम्र में, लुईस ने कार्टिंग प्रतियोगिता में अपनी पहली जीत हासिल की—एक ऐसी जीत जिसने उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया।

तेरह साल की उम्र में, उनकी प्रतिभा ने मैकलारेन मर्सिडीज का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने उन्हें एक विकास चालक के रूप में अनुबंधित किया। उस निर्णायक क्षण ने उन्हें फॉर्मूला वन की दुनिया की ओर अग्रसर किया। हालाँकि, यह सफ़र आसान नहीं था। लुईस को स्कूल और रेसट्रैक, दोनों जगह नस्लवाद, उपहास और अथक विरोध का सामना करना पड़ा। एक अश्वेत युवा के रूप में, उन्हें अक्सर भेदभाव और अपमान का सामना करना पड़ा। फिर भी, उन्होंने इन अपमानों को अपने आत्मविश्वास को डगमगाने नहीं दिया। इसके बजाय, वे दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़े, यह विश्वास करते हुए कि "मैं यह कर सकता हूँ।"

अपनी प्रतिभा और अथक परिश्रम से, लुईस सात बार के विश्व चैंपियन बने। उन्होंने 103 से ज़्यादा रेस जीती हैं और "सर" की प्रतिष्ठित उपाधि अर्जित की है। लेकिन लुईस सिर्फ़ एक रेसिंग दिग्गज ही नहीं हैं—वे सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता और नस्लीय समानता की एक सशक्त आवाज़ भी हैं। कई लोगों को कभी संदेह था कि एक युवा अश्वेत कभी F1 की दुनिया जीत सकता है। लेकिन यह उनका साहस, दृढ़ता, अटूट विश्वास और उनके पिता का अटूट समर्थन ही था जिसने उन्हें जीत दिलाई।

इसे पढ़ने वालों के लिए: चुनौतियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, याद रखें—हार तभी मिलती है जब आप आगे बढ़ना बंद कर देते हैं। अगर आप दौड़ते रहेंगे, तो जीत ज़रूर आपका पीछा करेगी। दौड़ते रहो, और सफलता ज़रूर आपके पीछे आएगी... ठीक वैसे ही जैसे लुईस हैमिल्टन के जीवन में हुआ था।

वचन में विश्वास

पृथ्वी पर अपने समय के दौरान, यीशु भलाई के काम करते रहे—बीमारों को चंगा करते, बंदियों को आज़ाद करते, चमत्कार करते, और जहाँ भी जाते, लोगों को आशीष देते। बाइबल हमें बताती है कि विभिन्न कष्टों से पीड़ित लोग उनसे चंगाई और मुक्ति की प्रार्थना करते थे।

ऐसा ही एक व्यक्ति एक पिता था, जो अपने बेटे के लिए व्याकुल था, जो एक अशुद्ध आत्मा द्वारा सताया जा रहा था और पीड़ा से तड़प रहा था। वह यीशु के पास आया और प्रार्थना की, "यदि तू कुछ कर सकता है, तो हम पर दया करें और हमारी सहायता करें।" यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तू कर सकता है? यह क्या बात है, विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ संभव है" (मरकुस 9:23)। यह हमारा विश्वास ही है जो परमेश्वर के हाथों से चमत्कार लाता है।

हमें किस पर विश्वास करना चाहिए?

हमें परमेश्वर के वचन पर—पवित्रशास्त्र में दर्ज़ उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना चाहिए। (मत्ती 8:8) में, एक रोमी सूबेदार यीशु के पास आता है और कहता है, "मेरा सेवक घर पर लकवाग्रस्त पड़ा है, बहुत पीड़ा में है। बस वचन कह दे, तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं आकर उसे चंगा करूँगा।" लेकिन सूबेदार ने जवाब दिया, "हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए। केवल एक वचन कह

दे, तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।" उसे यीशु के वचन की प्रामाणिकता पर दृढ़ विश्वास था—और इसी विश्वास ने प्रभु को प्रेरित किया।

हम वचन पर विश्वास करके चमत्कार कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

एक बार एक भाई को गंभीर बीमारी का पता चला और डॉक्टरों ने उसे ठीक न होने की बात कहकर छोड़ दिया। उस कठिन समय में, उसने प्रार्थना की और वचन पर मनन करना शुरू किया। (भजन संहिता 117:17-18) का एक पद उसे बहुत प्रभावित कर गया: "मैं न मरूँगा, परन्तु जीवित रहूँगा, और प्रभु के कामों का वर्णन करूँगा। प्रभु ने मुझे कठोर ताड़ना तो दी है, परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया है।" वह इसे बार-बार ज़ोर से पढ़ने लगा, ताकि उसके कान इसे सुन सकें। ऐसा करते ही, उसके भीतर विश्वास बढ़ने लगा। साहसपूर्वक इसकी घोषणा करने और प्रभु की आराधना करने से, अंततः उसे चंगाई मिली—और आज, वह यीशु की

गवाही देता है। परमेश्वर के वचन में विश्वास के द्वारा चमत्कार होते हैं।

लेकिन अगर मुझमें कोई विश्वास न हो तो क्या होगा? मैं इसे कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

"अतः विश्वास सुनने से, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। जैसे-जैसे आप परमेश्वर के वचन को सुनते और उस पर मनन करते रहेंगे, आपका विश्वास बढ़ता जाएगा। परमेश्वर का जीवित, सामर्थी वचन ही हमारे अंदर विश्वास को जन्म देता है। जब आप पवित्रशास्त्र पढ़ते हैं, तो विश्वास जागृत होता है। जब आप ऐसे शब्द बोलते हैं जो यीशु को एक चमत्कारी परमेश्वर घोषित करते हैं—जो कल, आज और युगानयुग एक जैसा है—तो आपका विश्वास मज़बूत होगा।

पवित्र आत्मा की सहायता से वचन को पढ़ना और उस पर मनन करना विश्वास का निर्माण करता है। लेकिन अविश्वास बोलने से और भी अविश्वास पैदा होता है। जब पवित्रशास्त्र को गलत तरीके से पढ़ाया जाता है, तो शैतान उसके माध्यम से कार्य करता है, हमारा विश्वास तोड़ता है और हमारे हृदय में संदेह का बीज बोता है। लेकिन जब हम वचन पर विश्वास करते हैं और आशा के साथ सुनते हैं, तो पवित्र आत्मा चलन करता है और हमारे भीतर विश्वास को प्रज्वलित करता है। चमत्कार होते हैं। विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है—जीवित और सामर्थी वचन जो हमारे भीतर कार्य करते हैं और हमारे विश्वास और हमारे जीवन, दोनों को पुनर्जागृत करते हैं।

दक्षिण कोरिया की एक सच्ची कहानी

दक्षिण कोरिया में, बौद्ध धर्म का पालन करने वाला एक 17 वर्षीय लड़का, दोनों फेफड़ों के काम करना बंद कर देने के बाद, मृत्युशय्या पर पड़ा था। डॉक्टरों ने उम्मीद छोड़ दी थी। उसकी गंभीर हालत की खबर हर जगह फैल गई। इस बीच, एक युवा मसीही लड़की, जिसने उसकी स्थिति के बारे में सुना था, उसके हृदय में एक गहरा बोझ महसूस हुआ। उसने पुरे मन से प्रार्थना की और फिर उसे नए नियम की एक प्रति देते हुए कहा, "कृपया इन वचनों को पढ़ें। यीशु तुम्हें चंगा कर देंगे।"

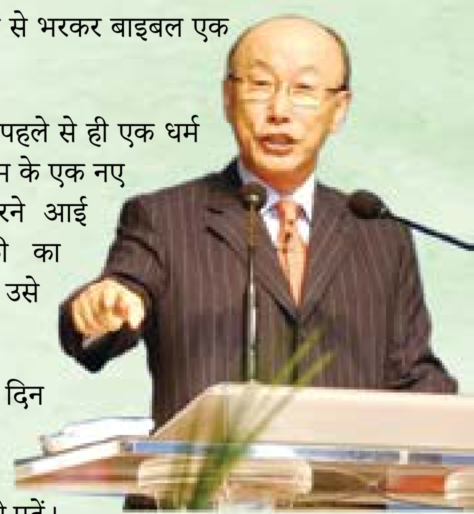

लेकिन लड़के ने गुस्से से भरकर बाइबल एक तरफ फेंक दी

और कहा, "मेरा तो पहले से ही एक धर्म है। तुम यहाँ यीशु नाम के एक नए ईश्वर का प्रचार करने आई हो?" उसने लड़की का अपमान किया और उसे भगा दिया।

अविचलित, वह दूसरे दिन लौटी और अपनी विनती दोहराई: "कृपया इन वचनों को पढ़ें। यीशु तुम्हारे लिए चमत्कार करेंगे।" इस बार, उसने गुस्से में उसे थप्पड़ मारा। फिर भी वह तीसरी बार फिर आई। इतने अपमान और मार-खाने के बावजूद उसकी दृढ़ता देखकर, लड़का थोड़ा नरम पड़ा। उसने बाइबल उठाकर अपने बिस्तर के पास रख दी।
कुछ दिनों बाद, उसने उत्सुकता से पुस्तक खोली और देखा कि उसमें क्या लिखा है। उसने यीशु के बारे में पढ़ना शुरू किया—कैसे उन्होंने लोगों से प्रेम किया, बीमारों पर दया की और उन्हें चंगा किया। पढ़ते-पढ़ते वह स्वयं को रोक नहीं पाया। वह इस यीशु के प्रेम और सामर्थ से अभिभूत हो गया। पढ़ते-पढ़ते उसके हृदय में विश्वास की लहर दौड़ गई। उसे विश्वास होने लगा: "यह यीशु, जो मृत्यु के बाद भी जीवित है, मुझे भी अवश्य चंगा करेगा।" वह यीशु से सच्चे मन से प्रार्थना करने लगा। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी, उसे छुआ और उसे पूरी तरह से चंगा कर दिया। वह मृत्युशय्या अलौकिक उपचार का स्थान बन गई।

वह युवक आगे चलकर दुनिया के सबसे बड़े चर्च का संस्थापक बना —डॉ. पॉल योंगी चो। परमेश्वर के वचन ने ही उसमें विश्वास जगाया और उसे चमत्कार दिलाया। क्या आप आज विश्वास करते हैं? वही यीशु जिसने उस समय चमत्कार किए थे, आज भी चमत्कार कर रहे हैं। क्या आप विश्वास करेंगे?

क्या आप आज विश्वास करते हैं?
वही यीशु जिसने उस समय चमत्कार किए थे, आज भी चमत्कार कर रहे हैं।
क्या आप विश्वास करेंगे?

पुनर्जीवित वचन आपका जीवन रेखा है।

परमेश्वर का वचन एक तेज़ तलवार की तरह है
जो हमारे हृदयों को छेदता है,
हमारे विचारों और इरादों को जांचता है।

यह एक दीपक भी है जो हमारे मार्ग को रोशन करता है। **"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है" (भजन संहिता 119:105)**। जब जीवन भ्रमित और अस्पष्ट लगता है, तो वचन ही सही दिशा दिखाता है।

जब पवित्रशास्त्र आपके हृदय में संजोया जाता है, तो आपको सही निर्णय लेने की बुद्धि प्राप्त होती है। जब वचन आपके मन और आत्मा में गहराई से अंकित हो जाता है, तो यह आपको पाप में भटकने से रोकता है और पवित्रता के मार्ग पर चलने में आपकी सहायता करता है। परीक्षा और दुःख के क्षणों में, वचन ही हमें सांत्वना देता है और पुनर्जागृत करता है। इसलिए, केवल बाइबल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है - हमें इसे अपने हृदय में छिपाना चाहिए। जब पवित्रशास्त्र हमारे भीतर निवास करता है, तो यह परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से एक सुरक्षा कवच बन जाता है।

राजा दाऊद ने अपने अनुभव से इसे खूबसूरती से व्यक्त किया है: **"मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है कि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ"** (भजन संहिता 119:11)। जब वचन हमारे हृदय में जड़ पकड़ लेता है, तो यह पाप का विरोध करने में हमारी ताकत बन जाता है।

यदि पाप में बंधे लोगों को मुक्त करना है, तो प्रभु के वचन का प्रचार उनके बीच किया जाना चाहिए। यह हृदयों को छेद देता है और पश्चाताप उत्पन्न करता है। पौलुस और सीलास का उदाहरण लीजिए, जो फिलिप्पी में कुछ दिन रुके थे। अपनी रीति के अनुसार, वे नदी के किनारे प्रार्थना स्थल पर गए और वहाँ एकत्रित स्त्रियों के साथ सुसमाचार का प्रचार किया। उनमें थुआतीरा की लुदिया नाम की एक स्त्री भी थी। जब उसने पौलुस के संदेश को ध्यान से सुना, तो प्रभु ने उसका हृदय खोल दिया। उसने न केवल मसीह को स्वीकार किया, बल्कि अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा भी लिया। परमेश्वर के वचन ने उन लोगों को जीवन दिया जो कभी पाप में मरे हुए थे।

पौलुस और सीलास के कैद होने के बाद भी, वे निराश नहीं हुए। इसके बजाय, उन्होंने परमेश्वर की आराधना की और स्तुति गीतों को गाया। अचानक, एक बड़ा भूकंप आया—कारागार की नींव हिल गई, और सभी दरवाजे खुल गए। जब दरोगा यह सोचकर कि कैदी भाग गए हैं, आत्महत्या करने ही वाला था कि पौलुस चिल्लाया, **"अपने आप को नुकसान मत पहुँचाओ! हम सब यहाँ हैं!"** (प्रेरितों 16:28)।

बाद में, उन्होंने दरोगा और उसके परिवार के साथ प्रभु का वचन साझा किया। संदेश सुनकर, उन्होंने विश्वास किया

और बपतिस्मा लिया।

एक बार फिर, परमेश्वर के वचन की सामर्थ ने हृदयों को पश्चाताप और परिवर्तन की ओर प्रेरित किया।

इन अंतिम दिनों में - वचन के अकाल के दिनों में - यह आवश्यक है कि परमेश्वर का वचन हमारे भीतर प्रचुर मात्रा में निवास करे। तभी हम साहसपूर्वक इसे दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

जब शैतान यीशु को लुभाने आया, तो प्रभु ने अपने हृदय में पहले से ही संचित वचन को प्रकट करके हर प्रलोभन पर विजय प्राप्त की। हमारे भीतर का वचन जीवन और सामर्थ प्रदान करता है।

प्रिय युवाओ,
परमेश्वर का वचन किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक तेज है। परीक्षा और परीक्षण के दिनों में, यह एकमात्र ऐसा हथियार है जो आपको पुनर्जागृत करेगा और बचाएगा। यीशु की तरह, यदि हम वचन में दृढ़ रहें, तो हम शत्रु पर विजय प्राप्त करेंगे और एक विजयी जीवन जीएँगे!

Revival IGNITERS Monthly Fellowship

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

अंजीर का पेड़ जो पुनर्जीवित किया गया

प्रिय मित्रों, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में अभिवादन!

"अंजीर का पेड़ जो पुनर्जीवित किया गया" नामक बाइबिल कथा के माध्यम से आपसे एक बार फिर मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

पिछले महीने, हमने इस बात पर गौर किया कि इस्राएल के परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए कैसे युद्ध लड़ा। इस महीने, हम इस्राएल—अंजीर का पेड़ जो पुनर्जीवित किया गया —और 'यीशु छुड़ाता है' सेवकाई के बीच के संबंध पर गहराई से विचार करेंगे।

मित्रों, मेरा मानना है कि आप में से कई लोग "यीशु छुड़ाता है" की सेवकाई से अच्छी तरह परिचित हैं। प्रभु ने पिछले 46 वर्षों से इस सेवकाई का कृपापूर्वक नेतृत्व किया है। पिछले 20 वर्षों से, इस सेवकाई के माध्यम से, हम 50 सदस्यों के समूहों के साथ, इस्राएल में वार्षिक प्रार्थना यात्राओं का आयोजन करते आ रहे हैं। ये टीमें अक्सर ऐसे परिवारों से बनी होती हैं जो यीशु उद्धारक के दर्शन से गहराई से जुड़े होते हैं। इन यात्राओं के दौरान सबसे अनमोल क्षणों में से एक है, गेथसेमेन के बगीचे में, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, प्रार्थना में बिताया गया समय।

2015 में, ऐसी ही एक यात्रा के दौरान, हमारे प्रिय भाई मोहन सी. लाज़रस को इस्राएल की शांति के लिए गतसमनी के बगीचे में मध्यस्थता करने के लिए प्रेरित किया गया। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, प्रभु ने हस्तक्षेप किया और स्पष्ट रूप से कहा,

"उद्धार के बिना इस्राएल में शांति कैसे हो सकती है?" फिर उन्होंने शास्त्र की ओर इशारा किया जिसमें कहा गया है, "सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।" प्रभु ने एक भविष्यवाणी कही, "इस्राएली उद्धार पाएँगे, और इस्राएल की भूमि पर पुनर्जागृति की आग उंडेली जाएगी।"

प्रभु के निर्देश; "तुम्हें अपनी भूमि (भारत) और मेरी भूमि (इस्राएल) के पुनर्जागृति के लिए परिश्रम करना होगा" के पालन में, एक दर्शन का जन्म हुआ, जिसे 'इस्राएल रिवाइवल प्रेयर टूर' कहा गया।

इस तरह की पहली यात्रा 2016 में हुई थी जिसमें 400 से ज़्यादा विश्वासी शामिल हुए थे। उस यात्रा के दौरान, यरूशलेम में 12 घंटे की प्रार्थना सभा आयोजित की गई थी। बाइबिल में वर्णित महत्वपूर्ण स्थानों, जैसे गलील सागर, कार्मेल पर्वत, गतसमनी का बगीचा, मकबरा और सिदकिय्याह की गुफा, पर दो-दो घंटे की अतिरिक्त मध्यस्थता सभाएँ आयोजित की गईं।

इज़राइल राष्ट्र के आँकड़े

इज़राइल राष्ट्र के आँकड़े	96लाख
राजधानी	यरूशलेम
लोग की जाति	यहूदी अरब द्रूज़ अम्मोनी
यहूदियों	लगभग 71 लाख
गैर-यहूदी (अरब,ईसाई, अन्य धर्म द्रूज़)	लगभग 25लाख
बोली जाने वाली भाषा	हिब्रू अरबी अंग्रेजी रूसी फ्रेंच
मौद्रिक मूल्य	शेकेल
जिले	6+1

यरूशलेम में 12 घंटे की प्रार्थना सभा विशेष रूप से गहन थी। भाई मोहन सी. लाज़रस और भाई विंसेंट सेल्वाकुमार ने इस्राएल के लिए परमेश्वर की भविष्यसूचक योजनाओं और धर्मशास्त्रीय दर्शनों को साझा किया और मण्डली को गहन प्रार्थना में नेतृत्व प्रदान किया। परिणामस्वरूप, कई लोगों ने इस्राएल के लिए एक गहरा बोझ ग्रहण किया और राष्ट्र के लिए मध्यस्थ बनने के लिए स्वयं को समर्पित किया।

इसके बाद 2017, 2018, 2019 और 2023 में पुनर्जागृति प्रार्थना यात्राएँ आयोजित की गईं। इनमें से प्रत्येक में, प्रतिभागियों ने न केवल इस्राएल के लिए प्रार्थना करने के लिए, बल्कि उसकी ओर से कार्य करने के लिए भी स्वयं को समर्पित किया। इन यात्राओं के अलावा, इज़राइल पुनर्जागृति उपवास प्रार्थनाएँ वर्ष 2017, 2018, 2019, 2022 और 2024 में दो बार (मई और नवंबर) आयोजित की गईं। इन सभाओं के दौरान, परमेश्वर की संतानों ने सात दिनों तक उपवास और प्रार्थना की, और इज़राइल के लिए सच्चे मन से प्रार्थना की।

इन प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप, प्रभु ने इज़राइल की भूमि में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। बड़ी संख्या में यहूदियों ने यीशु को मसीहा के रूप में जाना। इज़राइल के लोगों के बीच सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हुई। पूरे देश में कलीसियाएँ बढ़ रही हैं और उनकी संख्या बढ़ रही है। प्रभु ने राष्ट्र के भीतर 800 से अधिक प्रार्थना कक्ष स्थापित किए हैं। दस अलग-अलग देशों के विश्वासी अब इज़राइल के उद्धार, पुनर्जागृति, सुरक्षा और आशीषों के लिए ईमानदारी से प्रार्थना कर रहे हैं।

(इज़राइल की भूमि के बारे में सांख्यिकीय जानकारी यहाँ शामिल की जाएगी।)

वास्तव में, अंजीर का पेड़ एक बार फिर पुनर्जीवित हो गया है। उस पर पुनर्जागृति की आग का एक और प्रकोप अवश्य ही उतरेगा।

"मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और काश वह पहले ही जल चुकी होती!" (लूका 12:49)

यह दिव्य अभिलाषा अवश्य पूरी होनी चाहिए।

जिस प्रकार प्रेरितों के युग में पिन्तेकुस्त के दिन पुनर्जागृति की आग उंडेली गई थी, उसी प्रकार परमेश्वर उसी आग को फिर से उंडेलना चाहता है—ठीक इस्राएल के हृदय में। प्रभु आपको इस प्रार्थना आंदोलन का हिस्सा बनने के लिए बुला रहे हैं।

यदि आप इच्छुक हैं, तो मध्यस्थता में हमारे साथ शामिल होने के लिए आपका हार्दिक स्वागत है। हम आपको विशेष रूप से इस्राएल पर केंद्रित मासिक प्रार्थना बिंदु भेजेंगे। आप अकेले, परिवार के साथ, अपने चर्च के साथ, या प्रार्थना समूहों में प्रार्थना कर सकते हैं। आइए हम तब तक एक साथ खड़े रहें जब तक इस्राएल की भूमि में प्रभु की इच्छा पूरी न हो जाए।

मारनाथा! यीशु जल्द ही आ रहे हैं!

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ

प्रिय भाइयो और बहनो,

इस वर्ष की शुरुआत से ही हम प्रार्थना के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन कर रहे हैं। इस महीने, हम एक अनोखे प्रकार की प्रार्थना पर विचार करते हैं जो प्रारंभिक कलीसिया ने पतरस के लिए की थी।

उत्साही(उत्कट) प्रार्थना

यह उस प्रकार की प्रार्थना नहीं थी जिसमें उत्तर मिलने तक लगातार प्रार्थना की जाती है। न ही यह किसी चीज़ को बलपूर्वक प्राप्त करने की कोई हताशापूर्ण, लंबी याचना थी। यह एक उत्कट, विश्वास से भरी प्रार्थना थी—जो ऐसे हृदय से निकली जो प्रभु के हृदय के साथ एक और पवित्र आत्मा से प्रेरित थी। ऐसे क्षणों में, पवित्र आत्मा स्वयं हमारे भीतर से मध्यस्थता करते हैं, हमें सिखाते हैं कि कैसे और क्या प्रार्थना करनी है। यह परमेश्वर की उपस्थिति में की गई एक गहन, गंभीर और निरंतर प्रार्थना की बात करता है।

पतरस के लिए कलीसिया की उत्साही प्रार्थना प्रेरितों के काम अध्याय 12 में दर्ज है। चूँकि पतरस प्रारंभिक कलीसिया का एक प्रमुख नेता था, इसलिए राजा हेरोदेस ने उसे बंदी बना लिया था। जब पतरस बंदीगृह में था, तब कलीसिया ने उसके लिए निरंतर, भावुक, दृढ़ता के साथ मध्यस्थता की। उनकी प्रार्थनाओं में पतरस के प्रति उनका विश्वास और गहरा प्रेम, दोनों झलक रहे थे।

पतरस को जेल के दरवाज़ों में ज़ंजीरों से जकड़ा गया था और वह इस बात से अनजान था कि उसे एक चमत्कारिक मुक्ति मिलने वाली है। इसलिए, उसने अपने जूते उतार दिए और अपना लबादा ढीला करके सो गया। लेकिन अचानक, प्रभु का एक दूत प्रकट हुआ, उसने पतरस को जगाने के लिए उसकी पसली पर हाथ मारा और कहा, "अपनी कमर बाँध, अपने जूते पहन, अपना वस्त्र पहिन, और मेरे पीछे हो ले।" हालाँकि पतरस ने स्वर्गदूत की बात मान ली और उसके पीछे चला गया, लेकिन उसे एहसास नहीं हुआ कि जो हो रहा था वह सच था—उसे लगा कि उसे कोई दर्शन हो रहा है। और होता भी क्यों न? सामान्य परिस्थितियों में ऐसा हो ही नहीं सकता था। आख़िरकार, उसकी सुरक्षा के लिए सैनिकों की चार टुकड़ियाँ ख़ास तौर पर तैनात की गई थीं।

तो, इतनी कड़ी सुरक्षा में, पतरस का आज़ाद होकर बाहर आना कैसे संभव था?

यह इसलिए संभव था क्योंकि कलीसिया उसके लिए हृदय से प्रार्थना कर रही थी। प्रार्थना की सामर्थ ऐसी ही होती है! पतरस को मुकदमे के लिए बाहर लाए जाने से ठीक पहले वाली रात, प्रभु ने उसे जेल से छुड़ाने के लिए अपना दूत भेजा। जब पतरस को एहसास हुआ कि सचमुच प्रभु ने ही उसे छुड़ाया है, तो वह उस घर में गया जहाँ बहुत से विश्वासी प्रार्थना में जुटे थे। उसने पाया कि वे अभी भी पूरे जोश से प्रार्थना कर रहे थे। उनकी प्रार्थना परमेश्वर के सिंहासन कक्ष तक पहुँच चुकी थी, और परमेश्वर ने पतरस को मुक्त करके उत्तर दिया था।

ध्यान दें: जब पतरस को कैद किया गया, तो कलीसिया राजा हेरोदेस के पास नहीं गई, न ही उन्होंने जेल के पहरेदारों,

अधिकारियों, या यहाँ तक कि पतरस पर आरोप लगाने वालों से भी गुहार लगाई। इसके बजाय, वे प्रभु की ओर मुड़े और पूरे जोश से प्रार्थना की। प्रभु कभी भी धर्मी की प्रार्थना को अनदेखा नहीं करते; वे कभी भी भावुक मध्यस्थता को अस्वीकार नहीं करते। बाइबल कहती है, "धर्मी जन की प्रभावशाली, उत्कट प्रार्थना बहुत फलदायी होती है" (याकूब 5:16)। परमेश्वर ने अपने दूत को भेजकर और चमत्कारिक रूप से पतरस को छुड़ाकर कलीसिया की उत्कट प्रार्थना का उत्तर दिया।

दानिय्येल के जीवन में भी हम ऐसा ही उदाहरण देखते हैं। (दानिय्येल 6:16) में, हम पढ़ते हैं कि वह प्रार्थना में दृढ़ और उत्कट रहा। जिस परमेश्वर ने दानिय्येल को सिंहों के मुँह से बचाया था, उसी ने राजा से सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करवाई कि केवल वही जीवित परमेश्वर है। यह चमत्कार इतना विशाल था कि राजा ने भी दानिय्येल के परमेश्वर को ही सच्चा परमेश्वर घोषित कर दिया।

उत्पीड़न और कष्टों का सामना करने के बावजूद, जो लोग प्रार्थना में तत्पर रहे, वे विजयी हुए। जिन शत्रुओं ने उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया, वे स्वयं परमेश्वर द्वारा पराजित और लज्जित हुए (देखें प्रेरितों के काम 12:22-23; प्रेरितों के काम 16:28-39; दानिय्येल 6:24)।

आज भी, चाहे हम कितनी भी समस्याओं का सामना करें, हमें डरने की ज़रूरत नहीं है। हमारी प्रार्थनाएँ कभी व्यर्थ नहीं जाएँगी। आइए हम प्रभु से निरंतर और उत्कट प्रार्थना करते रहें—और वह हमारी बंधुआई से हमें मुक्त कर देगा!

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/11/2025 और 06/03/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

संपर्क संख्या : +919750955548
YouTube Jesus Redeems - Hindi
Comforter
www.comfortertv.com

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से "युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सऐप करें।

+91 9750955548 youth@jesuredeems.org

सनसनीखेज खबर!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? इस महीने के सनसनीखेज़ खबर संस्करण के ज़रिए एक बार फिर आपसे जुड़कर मुझे बेहद खुशी हो रही है। और सोचिए क्या? यह महीना बेहद खास है। क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं क्यों?

हम्म... बिल्कुल सही! यह वह महीना है जब हम अपने शिक्षकों का सम्मान करते हैं - वे जो हमारी शरारतों से खुश होते हैं, हमारी उलझनों को सुलझाते हैं, हमारी गलतियों को सुधारते हैं, आत्मविश्वास जगाते हैं, हमारी असफलताओं को सफलता की सीढ़ी बनाते हैं, और हमें ईर्ष्या नहीं, बल्कि गर्व का आशीष देते हैं। इस खण्ड को पढ़ने वाले सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

ठीक है... तो चलिए इस महीने की कहानी पर चलते हैं?

बाइबल में एक रोमी सूबेदार का वृत्तांत है जिसका सेवक गंभीर रूप से बीमार था और मरने के कगार पर था। बहुत चिंतित होकर, वह चाहता था कि यीशु उसके सेवक को ठीक कर दें। बिना किसी हिचकिचाहट के, यीशु उसके साथ चल दिए। हालाँकि, जैसे ही वे घर के पास पहुँचे, सूबेदार ने संदेश भेजा, "हे प्रभु, अपने आप को कष्ट न दें, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरी छत के नीचे आएँ।"

आदेश देने के इतने आदी व्यक्ति की यह कैसी अद्भुत विनम्रता थी! उसने आगे कहा, "सिर्फ़ एक शब्द कह दो, और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। क्योंकि मैं भी अधिकारी हूँ, और मेरे अधीन सैनिक हैं। मैं एक से कहता हूँ, 'जा,' तो वह जाता है; दूसरे से कहता हूँ, 'आ,' तो वह आता है; और अपने सेवक से कहता हूँ, 'यह कर,' तो वह करता है।"

यह सुनकर यीशु चकित रह गए। उन्होंने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, मैंने इस्राएल में भी ऐसा महान विश्वास नहीं पाया।" और सिर्फ़ एक शब्द से, यीशु ने उस सेवक को चंगा कर दिया—दूर से ही।

क्या?! एक ही शब्द से चमत्कार? और वह भी दूर से? यह तो अद्भुत है, मित्रों!

जब मैं सोच रहा था कि क्या आज भी ऐसे चमत्कार होते हैं, तभी तिरुप्पुर शहर से एक ज़बरदस्त गवाही मेरे पास पहुँची। वहाँ, कैल्वरी हैंड्स नाम का एक प्रार्थना समूह सक्रिय रूप से काम कर रहा है। वे न केवल राष्ट्र के लिए मध्यस्थता करते हैं, बल्कि गाँवों में सुसमाचार प्रचार भी करते हैं और गरीबों व ज़रूरतमंदों की सेवा भी करते हैं।

इस समूह की एक बहन की मुलाक़ात रत्ना नाम की एक बुज़ुर्ग महिला से हुई, जो रक्त प्रवाह में रुकावट और तंत्रिका संबंधी समस्याओं के कारण पैरों में गंभीर सूजन के कारण बिस्तर पर पड़ी थी। डॉक्टरों ने उसे सिर्फ़ तीन महीने जीने का समय दिया था। करुणा से अभिभूत, बहन उसे ठीक होते देखना चाहती थी और यीशु की चंगा करने की सामर्थ के बारे में बताने के लिए उसके घर जाने का फैसला किया। लेकिन बुज़ुर्ग महिला ने उसे यह कहते हुए अंदर आने से मना कर दिया, "तुम मेरे घर में प्रवेश नहीं कर सकती।"

निडर होकर, बहन बाहर खड़ी रही और बोली, "मैं अंदर नहीं आऊँगी, लेकिन मैं यहीं से यीशु के बारे में बताऊँगी।" उसने घर के बाहर ही, उसके चमत्कारों के बारे में बताया और रत्ना के लिए प्रार्थना की। हर दिन, वह वापस आकर उसी जगह से प्रार्थना करती।

और फिर — एक चमत्कार! धीरे-धीरे, बुज़ुर्ग महिला के पैरों में बदलाव आने लगे। अंतर देखकर, उसने अंततः बहन को प्रार्थना के लिए अपने घर आमंत्रित किया। जैसे-जैसे उनका रिश्ता मज़बूत होता गया, बहन ने उसे अपने समूह द्वारा परिवारों के लिए आयोजित की जाने वाली सुबह 5 बजे की दैनिक कॉन्फ्रेंस कॉल प्रार्थना से परिचित कराया। उत्सुकतावश, वह बुज़ुर्ग महिला भी उसमें शामिल हो गई।

इन सुबह-सुबह की कॉल्स के दौरान, एक छोटा सा भक्तिमय वचन सुनाया जाता है और उसके बाद प्रार्थना होती है। दिन-प्रति-दिन सुनते रहने से, उसके हृदय में विश्वास बढ़ने लगा। उन वचनों को थामे हुए, वह सच्चे मन से प्रार्थना करने लगी। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, सूजन कम हो गया, घाव भर गए, और एक दिन, वह अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई।

सदमे में उसका परिवार उसे डॉक्टर के पास ले गया — जिसे अपनी आँखों पर यकीन ही नहीं हुआ। उसके सभी टेस्ट के नतीजे सामान्य आए। नसों में रक्त प्रवाह पूरी तरह से बहाल हो गया। वह महिला, जो कभी यीशु के बारे में कुछ नहीं जानती थी, अपने पूरे परिवार के साथ, अब विश्वास में चल रही है। और तो और — अब वे अपनी किराने की दुकान पर ग्राहकों के साथ यीशु का सुसमाचार भी साझा करते हैं!

मित्रों, यह अकेला चमत्कार नहीं है! हमें कैल्वरी हैंड्स कॉन्फ्रेंस कॉल प्रार्थनाओं के माध्यम से ऐसे कई चमत्कारों के बारे में सुनने को मिला है। जिस तरह यीशु ने दूर से ही एक शब्द से सूबेदार के सेवक को चंगा किया था, उसी तरह इन मुलाकातों के दौरान बोले गए परमेश्वर के वचन ने इस दादी को भी दूर से ही चंगा कर दिया।

आज, हममें से कई लोग कॉन्फ्रेंस कॉल की प्रार्थनाओं में भी शामिल होते हैं। लेकिन आइए स्वयं से पूछें - क्या हम सचमुच मन और आत्मा से मौजूद हैं? या हम एक तरफ़ कॉल में शामिल होते हैं, दूसरी तरफ़ दूसरे काम निपटाते हैं या ऐप्स देखते रहते हैं?

इसे एक चेतावनी मानें। एकजुट प्रार्थना की सामर्थ किसी को भी मृत्युशय्या से उठा सकती है। निश्चित रूप से, यह हमारी किसी भी परिस्थिति को बदल सकती है! लेकिन इस सामर्थ के लिए प्रतिबद्धता, त्याग और प्रबल विश्वास की आवश्यकता होती है। आइए हम जोश और समर्पण के साथ प्रार्थना करें, और हम पहले कभी न देखे गए चमत्कार देखेंगे।

मै अगले महीने आपसे और भी ताज़ा खबरों के साथ फिर मिलूँगा! (जारी रहेगा...)

प्रार्थना मार्गदर्शिका

सितंबर 2025

किसानों द्वारा आत्महत्या

केवल 2025 के पहले तीन महीनों में, महाराष्ट्र में 767 किसानों ने आत्महत्या कर ली। राज्य में औसतन प्रतिदिन आठ किसान आत्महत्या करते हैं। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 13.74 करोड़ टन चावल का उत्पादन होता है, जिसका 25% पश्चिम बंगाल से आता है। हालाँकि, अनियमित वर्षा, जलवायु परिवर्तन, घटती मिट्टी की उर्वरता और कीटों का प्रकोप कृषि उत्पादकता को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। कम पैदावार, बढ़ते कर्ज और अपर्याप्त सिंचाई सुविधाओं ने कई किसानों को संकट के कगार पर ला खड़ा किया है। 2024 में, महाराष्ट्र में 2,635 किसानों ने आत्महत्या कर ली।

प्रार्थना बिंदु:

1. किसानों की सुरक्षा और आत्महत्या के विचारों के स्थान पर आशा और साहस के लिए प्रार्थना करें।
2. प्रार्थना करें कि भारत में उगाए गए चावल की उचित कीमतों पर खरीद हो और किसान बिना नुकसान के अपनी उपज बेच सकें।
3. कृषि भूमि को अत्यधिक वर्षा और कीटों से बचाने और भरपूर फसल के लिए परमेश्वरीय हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना करें।
4. प्रार्थना करें कि सरकार पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ सुनिश्चित करे और उर्वरक सस्ती दरों पर उपलब्ध कराए।
5. कृषि आवश्यकताओं के लिए बाधा-रहित बिजली आपूर्ति के लिए प्रार्थना करें।

विद्युत बोर्ड

भारत का विद्युत क्षेत्र लगभग 27 लाख कर्मचारियों को रोजगार देता है, जो 33.3 करोड़ से अधिक उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान करता है। देश प्रति घंटे 1,800 टेरावाट बिजली की खपत करता है। उद्योगों, घरों और कृषि में भारी उपयोग के साथ, बिजली की मांग हर साल 6% बढ़ जाती है। भारत की अधिकांश बिजली ताप विद्युत संयंत्रों के माध्यम से उत्पन्न होती है, जिसमें जल विद्युत, परमाणु और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत भी योगदान करते हैं। अनुमान है कि 2029-2030 तक बिजली उत्पादन में 64% की वृद्धि होगी।

प्रार्थना बिंदु:

1. बिजली क्षेत्र में कार्यरत 27 लाख श्रमिकों के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।
2. बिजली के दुरुपयोग और बर्बादी के विरुद्ध एक सशक्त जन जागरूकता के लिए प्रार्थना करें।
3. भारत के सभी घरों में पूर्ण विद्युतीकरण के लिए प्रार्थना करें।
4. बिजली उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि और बिजली संयंत्रों में सभी रिक्त पदों को भरने के लिए प्रार्थना करें।
5. देश भर में निर्बाध बिजली आपूर्ति और बिजली संयंत्रों के उचित रखरखाव के लिए प्रार्थना करें।

यौन उत्पीड़न के मामले

भारत में, प्रतिदिन औसतन 86 यौन उत्पीड़न के मामले दर्ज होते हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से 82 मामलों में, अपराधी पीड़िता का कोई परिचित होता है। हर घंटे चार यौन उत्पीड़न के मामले दर्ज किए जाते हैं। 18 से 30 वर्ष की आयु की महिलाएं सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। 2017 और 2022 के बीच, दर्ज किए गए 189,000 मामलों में से 113,000 पीड़ित 18 से 30 वर्ष की आयु के बीच के थे। चार में से एक लड़की 16 वर्ष की आयु से पहले यौन शोषण का शिकार होती है। छह में से एक बच्चा यौन शोषण का शिकार होता है। अठारह में से एक लड़का 16 वर्ष की आयु से पहले यौन उत्पीड़न का अनुभव करता है। अकेले 2024 में, कानून प्रवर्तन द्वारा यौन उत्पीड़न के 71,227 मामले आधिकारिक तौर पर दर्ज किए गए।

प्रार्थना बिंदुः

1. यौन उत्पीड़न के मामलों का समय पर समाधान सुनिश्चित करने के लिए न्यायिक प्रणाली द्वारा त्वरित कार्रवाई के लिए प्रार्थना करें।
2. इस विकट वास्तविकता में, जहाँ हर घंटे चार मामले दर्ज किए जाते हैं, एक अलौकिक परिवर्तन के लिए प्रार्थना करें।
3. प्रार्थना करें कि पीड़ितों को भावनात्मक उपचार मिले और अपराधियों को न्याय प्रणाली के माध्यम से उचित दंड मिले।
4. प्रार्थना करें कि सबसे अधिक प्रभावित महिलाओं के लिए पुनर्वास केंद्र और सहायता सेवाएँ उपलब्ध हों।
5. कम उम्र से ही यौन शोषण से बचाने के लिए युवा लड़कियों में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रार्थना करें।

रेलवे विभाग

भारत 13,169 यात्री ट्रेनों और 8,739 मालगाड़ियों का संचालन करता है। ये ट्रेनें प्रतिदिन 7,352 किलोमीटर की दूरी तय करती हैं और लगभग 12 लाख कर्मचारियों को रोजगार देती हैं। पिछले पाँच वर्षों में 219 रेल दुर्घटनाएँ हुई हैं। 2018-19 में 59 दुर्घटनाएँ हुईं; 2019-20 में 55; 2020-21 में 22; 2021-22 में 35; और 2022-23 में 48 दुर्घटनाएँ हुईं। अकेले 2023-24 में, 313 यात्रियों की जान चली गई और 1,000 से ज़्यादा घायल हुए। पिछले एक दशक में, भारत में 638 रेल दुर्घटनाएँ हुई हैं, जिनमें 748 लोगों की मृत्यु हुई और 1,500 से ज़्यादा लोग घायल हुए। रेलवे नेटवर्क 1,06,000 किलोमीटर से ज़्यादा लंबा है, जो देश के हर राज्य को जोड़ता है।

प्रार्थना बिंदुः

1. रेलवे क्षेत्र में कार्यरत 12 लाख कर्मचारियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए प्रार्थना करें।
2. रेल दुर्घटनाओं को रोकने और रेलवे पटरियों के उन्नयन के लिए सरकारी हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना करें।
3. प्रार्थना करें कि लंबी दूरी के ट्रेन चालकों के काम के घंटे कम हो जाएँ और कार्यभार को प्रबंधित करने के लिए रिक्त पदों को भरा जाए।
4. सिग्नलिंग त्रुटियों को दूर करने और पर्याप्त सुरक्षा अवरोधों की स्थापना के लिए प्रार्थना करें।
5. प्रार्थना करें कि रेलवे प्रणाली बुद्धिमत्ता और उत्कृष्टता के साथ कार्य करेगी ताकि और अधिक जान-माल की हानि को रोका जा सके।

पुनर्जागृति के बीज

प्रिय युवा भाई-बहन, हम अंत समय के पुनर्जागृति के दिनों में जी रहे हैं! हर महीने, इस खंड "पुनर्जागृति के बीज" के माध्यम से, हम उन मिशनरियों के जीवन का अन्वेषण करते हैं जिन्होंने घोर कठिनाइयों के बीच, पुनर्जागृति के बीज बोए। इस महीने, आइए हम एक ऐसे मिशनरी के प्रेरक जीवन पर ध्यान करें जिन्होंने मसीह के राज्य की स्थापना के लिए अथक परिश्रम किया-**जॉन थॉमस टकर।**

10 नवंबर, 1807 को आयरलैंड में जन्मे जॉन थॉमस टकर का पालन-पोषण ऐसे घर में हुआ जहाँ उन्हें छोटी उम्र से ही भक्ति और अनुशासन का पालन-पोषण मिला। 19 वर्ष की आयु में, वे एक प्रतिष्ठित वकील बनने के इच्छुक थे। इस सपने को साकार करने के लिए, उन्होंने कानून की पढ़ाई की और एक वकील के रूप में अभ्यास करना शुरू किया। अपनी युवावस्था में भी, वे सुसमाचार प्रचार में सक्रिय रूप से शामिल रहे।

1827 में, आयरलैंड में चर्च मिशन सोसाइटी द्वारा आयोजित एक मिशनरी सम्मेलन के दौरान, उन्हें सुसमाचार के प्रसार के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने की अलौकिक बुलाहट का एहसास हुआ। इस बुलाहट के आगे झुकते हुए, उन्होंने अपना फलता-फूलता कानूनी करियर त्याग दिया और 1833 में लंदन के एक बाइबल कॉलेज में दाखिला ले लिया। उन्होंने अपनी धर्मशास्त्र की पढ़ाई पूरी की और 5 जून, 1836 को इंग्लैंड में उन्हें धर्मगुरु नियुक्त किया गया।

उसी वर्ष, सीएमएस मिशन के माध्यम से, जॉन थॉमस को चेन्नई (तब मद्रास) भेजा गया। केवल छह महीनों में, उन्होंने तमिल भाषा में निपुणता प्राप्त कर ली और 5 फरवरी, 1837 को तिरुनेलवेली जिले के मेगननपुरम गाँव में अपना मिशनरी कार्य शुरू किया। 4 अक्टूबर, 1838 को उन्होंने मैरी डेविस से विवाह किया। दोनों ने मिलकर विभिन्न गाँवों में पैदल यात्रा की और सुसमाचार का प्रचार किया। इस दंपत्ति को तीन संतानों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

जॉन ने जिन क्षेत्रों में सेवा की, वे बंजर और दरिद्र थे। उन्होंने कृषि भूमि को सुधारने, स्थानीय मिट्टी के अनुकूल पेड़ लगाने, गाँवों को शुद्ध करने और सूखी बंजर भूमि को हरे-भरे उपवनों में बदलने का कार्य अपने हाथ में लिया। उनके करुणामय प्रयासों को देखकर, स्थानीय लोगों ने—जिनमें से कई ताड़ी निकालने वाले थे—सुसमाचार सुना और यीशु मसीह को स्वीकार किया। उनके लिए, उन्होंने एक छोटा सा चर्च बनवाया।

1844 में, उन्होंने एक स्कूल शुरू किया और अनाथों और परित्यक्त बच्चों के लिए छात्रावास भी बनवाए। परिणामस्वरूप, कई लोग जिन्होंने यीशु मसीह के बारे में कभी नहीं सुना था, वे भी विश्वास में आ गए और अपने बच्चों को स्कूल भेजने लगे। छात्र न केवल शैक्षणिक रूप से, बल्कि चरित्र में भी उत्कृष्ट थे। मेघनापुरम के आसपास के कई ग्रामीणों ने यीशु मसीह को स्वीकार किया। जॉन ने उन्हें बपतिस्मा दिया और उनके समुदायों में सुबह और शाम की आराधना का नेतृत्व करने के लिए धर्मशिक्षकों को नियुक्त किया।

लेकिन उनके काम का कड़ा विरोध हुआ। उनके सामाजिक सुधारों और सुसमाचार प्रचार से नाराज़ विरोधियों ने छप्पर वाले चर्चों में आग लगा दी। उन्होंने मसीहियों के घरों, संपत्तियों और खेतों को नष्ट कर दिया, और विश्वासियों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। फिर भी, मसीहियों ने अटूट धैर्य के साथ यह सब सहा। अपने कष्टों में, वे परमेश्वर से और

अधिक मजबूती से जुड़े रहे और उनका विश्वास और भी मज़बूत होता गया। कोई भी यीशु मसीह से विमुख नहीं हुआ, जिससे शत्रुओं का क्रोध और भी गहरा हो गया।

1845 में, मेघनापुरम और उसके आसपास के गाँवों में भयंकर चक्रवाती हवाओं ने तबाही मचाई। इसके बाद हैजा, उल्टी और दस्त जैसी जानलेवा बीमारियाँ फैल गईं। भयंकर अकाल और पेयजल की भारी कमी ने हालात और बिगाड़ दिए। हर तरफ मौत की चीखें गूंज रही थीं। इन तमाम मुसीबतों के बीच, जॉन थॉमस ने अपनी प्यारी बेटी मैरी जेन को भी खो दिया।

स्थानीय लोगों ने इन त्रासदियों के लिए लोगों के मसीही धर्म अपनाने को ज़िम्मेदार ठहराना शुरू कर दिया। हिंसा भड़क उठी। धमकियाँ बढ़ती गईं। उन्होंने जॉन थॉमस से अपना मिशनरी कार्य बंद करने की माँग की। लेकिन अविचल और निडर होकर—और अपने निजी दुःख के बावजूद—उन्होंने नए जोश के साथ पीड़ितों की सेवा जारी रखी। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर मदद और आशा की किरण दिखाई। उनकी पत्नी ने भी आगे आकर महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूहों का गठन किया और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल की स्थापना की।

इन सुसमाचार प्रचार, सामाजिक और महिला सशक्तिकरण प्रयासों के माध्यम से, कई ग्रामीणों ने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया। सामूहिक आराधना को सुगम बनाने के लिए, एक चर्च बनाने की योजना बनाई गई। निर्माण कार्य 20 जून, 1844 को शुरू हुआ और 9 दिसंबर, 1847 को चर्च का निर्माण पूरा हुआ और **सेंट पॉल चर्च** के नाम से इसका अभिषेक किया गया।

1857 में, मेघनापुरम में मसीहियों की आबादी 5,500 थी। 1869 तक, यह संख्या बढ़कर **45,000** हो गई थी!

जॉन थॉमस ने वेल्लालनविलई, अरुमुगनेरी, नालुमावडी, कदचपुरम, कायमोझी, प्रकाशपुरम, पन्नाविलई और क्रिश्चियन नगर जैसे गाँवों में भी बड़े चर्च बनवाए। सुब्रमण्यपुरम, रसमणिपुरम और पूवरासुर—हाशिए पर पड़े समुदायों के गाँव—में भी चर्च बनाए गए। उन्होंने **125 गाँवों** में सुसमाचार का प्रचार किया, चर्च बनवाए और **54 स्कूल** भी स्थापित किए।

उन्होंने **54 प्रचारकों** को प्रशिक्षित किया और चर्च की सेवा के लिए **प्रचारक** नियुक्त किए। विश्वासियों को मज़बूत करने के लिए, उन्होंने **12 पासवान** नियुक्त किए। उनके अथक परिश्रम के कारण, चर्च फले-फूले और आस्था में गहराई से जड़ें जमा लीं।

33 वर्षों की अनवरत सेवा के बाद, अपना पूरा जीवन मेघनापुरम और उसके आसपास के क्षेत्रों को समर्पित करते हुए, जॉन थॉमस 1865 में शारीरिक रूप से कमज़ोर हो गए। वे इलाज के लिए इंग्लैंड गए और थोड़ा ठीक हुए। फिर भी, मेघनापुरम के लोगों के प्यार और स्नेह से अलग होने का दुःख सहन न कर पाने के कारण, उन्होंने लौटने की ज़िद की। उन्होंने प्रतिज्ञा की, "मृत्यु के बाद भी, मैं दक्षिण तिरुनेलवेली के लोगों के बीच रहना चाहता हूँ।" अंततः, उनका

स्वास्थ्य फिर से बिगड़ गया और **28 मार्च, 1870** को, 62 वर्ष की आयु में, वे अनंत विश्राम में चले गए।

उन्होंने सांसारिक प्रसिद्धि और विलासिता को तुच्छ जाना, भारत से गहरा प्रेम किया, मसीह के प्रेम का प्रदर्शन किया, वचन को निष्ठापूर्वक बोया, प्रार्थना से धरती को भर दिया, विरोध के बीच कलीसियाओं का निर्माण किया, और सबसे उपेक्षित लोगों के लिए भी प्रभु का साक्षात्कार संभव बनाया।

आज, क्या आप भी उनके समान ऐसे कष्ट सहने और जोश के साथ दौड़ने के लिए तैयार हैं?

छिपे से सेवक तक

हमें पास्टर गोकुल जोसेफ से पल्लदम स्थित उनके चर्च में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के कुछ प्रभावशाली और प्रेरक क्षण साझा किए। हमने आपकी आशीष और प्रोत्साहन के लिए उनकी गवाही संकलित की है।

क्या आप हमें अपने बचपन और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बता सकते हैं?

हम मूल रूप से मदुरै के हैं। मेरा जन्म एक पुरोहित परिवार में हुआ और मेरा पालन-पोषण गहरी धार्मिक भावना के साथ हुआ। हमने अपना मंदिर बनवाया और नियमित रूप से अनुष्ठान और पूजा-अर्चना की। मेरे दादाजी भालों के साथ नृत्य और तीखे ब्लेडों पर चलने जैसे गहन भक्तिपूर्ण कार्य करते थे। हमारा परिवार अपनी आस्था के प्रति समर्पित था, और हमारे घर में एक समर्पित प्रार्थना कक्ष था जिसमें विभिन्न देवी-देवताओं की 200 से अधिक मूर्तियाँ थीं। जिस घर में मेरा जन्म हुआ, वहाँ आध्यात्मिक उत्साह ऐसा ही था। मेरे शुरुआती वर्षों में, हम मदुरै से पल्लदम चले गए।

आप अपने गृहनगर से पल्लदम क्यों आए?

जब मैं बहुत छोटा था, मेरे पिता को तिरुप्पुर जिले के कांगेयम में विद्युत बोर्ड (ईबी) में ₹30 प्रति माह के मामूली वेतन पर एक अस्थायी नौकरी मिल गई। हम पल्लदम में बस गए, और मेरे पिता रोज़ाना काम पर जाने के लिए एक घंटे से ज़्यादा का सफ़र तय करते थे। हम एक संयुक्त घर में रहते थे, जिसमें हम आठ लोग एक ही जगह में रहते थे, और तीस घरों में सिर्फ़ एक ही शौचालय था। बाद में, हम बारह परिवारों वाले एक और संयुक्त घर में चले गए— उसमें शौचालय तो था, लेकिन दरवाज़ा नहीं था। घर में अच्छी आमदनी और अच्छा खाना होने के बावजूद, शांति नहीं थी। मेरे पिता नशे में धुत होकर लौटते और माँ के प्रेम से बनाए खाने को फेंक देते। वह रोज़ शराब पीते और दो पैकेट सिगरेट पीते। हमारा घर अराजकता से भरा रहता था।

इतना सारा पैसा होने के बावजूद, आपके घर में शांति नहीं रहती थी। क्या आपने कोई समाधान खोजा?

हाँ। हम कई मंदिरों में जाने लगे, लेकिन मेरे माता-पिता के बीच लगातार झगड़े बंद नहीं हुए। मैं, मेरी माँ और मेरी बहन अक्सर पिता के डर से छत पर छिप जाते थे। इसी

तनाव के बीच, मेरी माँ की एक परिचित महिला ने सुझाव दिया कि हम एक मसीही पास्टर से प्रार्थना कराएं जिसे वह जानती थीं। हमें मसीही पसंद नहीं थे—हम उन्हें नीची जाति का मानते थे और उनसे पानी भी नहीं लेते थे। हमने गुस्से में इस विचार को खारिज कर दिया।

लेकिन जैसे-जैसे हमारी समस्याएँ बढ़ती गईं, मेरे माता-पिता ने अनिच्छा से पास्टर को आने दिया। वे आए और प्रार्थना की। उसी क्षण, हमें अपने घर में एक अवर्णनीय शांति का अनुभव होने लगा। धीरे-धीरे, मेरे माता-पिता, दोनों ने यीशु को अपने हृदय में स्वीकार कर लिया।

यह अविश्वसनीय है! आपके माता-पिता दोनों यीशु के अनुयायी बन गए? ऐसा कैसे हुआ?

कुछ ही समय बाद, मेरे पिता की नौकरी स्थायी हो गई। उनका वेतन ₹30 से बढ़कर ₹2,500 हो गया। यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था। मेरे पिता को एहसास हुआ कि अनगिनत देवताओं की पूजा करने के बावजूद, कुछ भी नहीं बदला था - लेकिन जब मसीहियों ने प्रार्थना की, तो आशीष प्राप्त हुआ। उन्होंने पास के चर्च में जाना शुरू दिया और उनका विश्वास और गहरा होता गया। मेरी माँ भी मसीह की खोज में लग गईं।

> हमें मसीहियों से नफ़रत थी; हम उन्हें नीची जाति मानते थे और उनसे पानी भी नहीं लेते थे।

आपकी माँ को यीशु के लिए इतना उत्साही किस बात ने बनाया?

चूँकि मेरे पिता बिजली आपूर्ति विभाग में काम करते थे, इसलिए उन्हें बिजली के खंभों पर चढ़ना पड़ता था। एक दिन, ड्यूटी के दौरान, वे खंभे से गिर गए, बुरी तरह घायल

पास. गोकुल जोसेफ अपने परिवार के साथ

हो गए और बेहोश हो गए। पल्लदम के डॉक्टर उनकी स्थिति को संभाल नहीं पाए, इसलिए हम उन्हें तुरंत कोयंबटूर ले गए। जब तक हम पहुँचे, उनका शरीर ठंडा और अकड़ चुका था।

हालाँकि मेरी माँ यीशु मसीह में विश्वास करने लगी थीं, तौभी उन्हें डर था कि हमारे पूर्वजों के देवताओं को छोड़ने से यह दुर्भाग्य आ सकता है। लेकिन अपने नए विश्वास पर अड़ी रहीं, उन्होंने अपने सारे गहने उतार दिए—अपनी शादी की चेन, चूड़ियाँ—और प्रार्थना की, "हे प्रभु, अगर आप मेरे पति को ठीक कर दें, तो मैं पूरे मन से आपका अनुसरण करूँगी।"

जैसे ही वे उन्हें वैन से स्ट्रेचर पर ले जाने वाले थे, कुछ चमत्कार हुआ—मेरे पिता उठ खड़े हुए और स्वयं चलने लगे। उस पल ने मेरी माँ पर गहरा प्रभाव डाला, और यीशु मसीह में उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

कितना अद्भुत चमत्कार! आपके माता-पिता ने यीशु मसीह को स्वीकार कर लिया... लेकिन आपके अपने जीवन का क्या?

जब मेरे माता-पिता चर्च जाते थे, तो मैं विरोध करता था। मैं उन लोगों के साथ घूमता था जो यीशु मसीह से नफ़रत करते थे। मैं सक्रिय रूप से मंदिरों में जाता और मूर्ति पूजा

नलुमावदी में एक बाइबल कॉलेज खुलने का विज्ञापन आया। इसे देखकर मेरी माँ ने सुझाव दिया, "तुम वहाँ जाकर पढ़ाई क्यों नहीं करते?" मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। बाइबल! लेकिन मुझे एक सुरक्षित जगह की ज़रूरत थी, इसलिए मैं मान गया। रात में चुपचाप मेरी माँ मुझे नलुमावादी ले गईं।

तुम छिपने चले गए... बाइबल कॉलेज में तुम्हारा अनुभव कैसा रहा?

मुझे कक्षाओं के दौरान एक शब्द भी समझ नहीं आता था—मैं अक्सर उनमे सो जाता था। पाप अब भी मेरे जीवन पर हावी था। मैं बस दिन गिन रहा था। मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी। पूरा एक साल बीत गया, लेकिन मुझमें कोई बदलाव नहीं आया। मेरे सहपाठी मुझे परमेश्वर के तम्बू में आने का निमंत्रण देते, लेकिन मैं हमेशा मना कर देता। एक दिन, मैं बस यह देखने गया कि वहाँ क्या होता है। मैं आराम से बैठा उन्हें प्रार्थना करते हुए देखता रहा।

लेकिन जैसे-जैसे मैं वहाँ जाता रहा, मुझे गाने पसंद आने लगे। मैंने एक डायरी खरीदी और 1,000 गाने लिख लिए। फिर एक रात, मैंने अपने भीतर एक आवाज़ साफ़ सुनी जो कह रही थी, "परमेश्वर के तम्बू में जाओ।" मैंने आज्ञा मानी, अपनी बाइबल और डायरी लेकर, घुटनों के बल बैठ गया—और दो घंटे तक बेकाबू होकर रोता रहा। मैंने हर पाप स्वीकार किया—प्रचारकों को पीटना, चर्चों में

करता। मुझे मसीही धर्म और मसीही मूल्यों से गहरी नफ़रत थी। मेरे ज़्यादातर मित्र गुंडे-बदमाश थे, और स्कूल के दिनों में भी, मेरी एक अनोखी शैली थी—पाँचों उंगलियों में अंगूठियाँ, गले में भारी जंजीरें। मेरी माँ अक्सर विनती करतीं, "मैं अब यीशु मसीह में विश्वास करती हूँ, और तुम अब भी मूर्तिपूजा करते रहते हो!" मैं जवाब में कहता, "सिर्फ़ इसलिए कि तुमने अपने गहने उतार दिए और अपना धर्म बदल लिया, इसका मतलब यह नहीं कि मैं भी करूँगा। मेरे देवता मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं!" हालाँकि मेरी कोई सच्ची आस्था नहीं थी, फिर भी मुझमें धार्मिक उत्साह था। मैं यीशु मसीह को एक "विदेशी देवता" मानता था और उनसे कोई लेना-देना नहीं चाहता था।

तो फिर तुम्हारा यह परिवर्तन कैसे हुआ?

एक दिन, हममें से लगभग 20 लोगों ने मिलकर 10 अन्य लोगों की पिटाई कर दी। पीड़ितों में से एक गिर गया, और जैसे ही मैंने उसे लात मारी, उसका दाँत टूट गया और मेरे पैर में चोट लग गई। आज भी उसका निशान बना हुआ है। मेरे पैर में सूजन और संक्रमण हो गया। इस बीच, यह घटना एक सांप्रदायिक झड़प में बदल गई, और 50 लोगों ने मुझे पीटकर बदला लेने की योजना बनाई। मैं बहुत डर गया था। इस सारे तनाव के बीच, किसी ने मुझे कुछ देर के लिए चुप रहने की सलाह दी। मैं घर पर लेटा हुआ था, समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूँ, तभी टीवी पर

खलल डालना, विश्वासियों का मज़ाक उड़ाना। दो घंटे रोने के बाद, मैंने एक और आवाज़ सुनी: "तुम यहाँ संयोग से नहीं आए। मैं तुम्हें लाया हूँ। जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे ज़रिए जो करने जा रहा हूँ, वह बहुत बड़ा होगा।" मैं लगभग दस मिनट तक मानो बेजान-सा पड़ा रहा। उस मुलाक़ात ने सब कुछ बदल दिया।

अद्भुत! ऐसी अलौकिक मुलाक़ात के बाद क्या हुआ?

जैसे ही प्रभु ने कहा, "मैंने तुम्हें सेवकाई के लिए बुलाया है," मैं गहरी शांति और आनंद भर गया। मैंने पूरे जोश के साथ बाइबल पढ़ना शुरू कर दिया। मैं पहले जैसा जीवन नहीं जी पा रहा था। मैंने नलुमावडी के आस-पास के गाँवों में प्रचार करना शुरू किया। परमेश्वर ने कुछ आत्माओं को मसीह की ओर ले जाने के लिए मेरा इस्तेमाल किया। अगले दो सालों में पवित्र आत्मा ने मुझे सामर्थी रूप से आकार देना शुरू कर दिया। तीन साल पूरे करने के बाद, मैंने नलुमावडी में रहकर सेवा करने के बारे में सोचा, लेकिन प्रभु ने कहा, "यह तुम्हारी जगह नहीं है। अपने गृहनगर जाओ - वहाँ मेरे पास तुम्हारे लिए बड़ी योजनाएँ हैं।" मैं तुरंत पल्लदम लौट आया।

तो जिस जगह से तुम छिपे थे, वही तुम्हारे बुलाहट का स्थान बन गया। तुम्हारे गृहनगर में तुम्हारी सेवकाई कैसे शुरू हुई?

मेरी माँ और कुछ महिलाएँ पहले से ही घर पर साथ मिलकर प्रार्थना कर रही थीं। उनके सहयोग से, मैंने सेवकाई का काम शुरू किया। विरोध बहुत ज़ोरदार था। किसी ने

मेरी मदद नहीं की। लेकिन जैसे-जैसे मैं प्रार्थना करता रहा, चमत्कार होने लगे। आत्माएँ आने लगीं।

चार लोगों से, संगति बढ़कर 100 लोगों की हो गई। उनमें से कोई भी मसीही परिवार से नहीं था - सभी गैर-मसीही पृष्ठभूमि से बचाए गए थे। मैं गाँव-गाँव जाकर सुसमाचार का प्रचार करता था, और परमेश्वर के अनुग्रह से, आज हमारे अपने घर की तीसरी मंज़िल पर एक चर्च चल रहा है। जिस जगह हमें प्रार्थना करने से मना किया गया था, उसी जगह अब हम खुशी-खुशी इकट्ठा होते हैं! वही मित्र जो कभी मुझसे झगड़ते थे, अब मेरे साथ खड़े हैं।

हमें अपने पारिवारिक जीवन के बारे में बताएँ।

मेरी शादी तीन साल पहले हुई थी। मेरी पत्नी, जेनिफर सामंथा, जीवन के हर पहलू में मेरा बहुत बड़ा सहारा हैं। तीन साल तक, हमारे कोई संतान नहीं हुई। हमें उपहास और कठोर शब्दों का सामना करना पड़ा। लेकिन ईश्वर की कृपा से, उन्होंने अब हमें एक बच्चे की आशीष दी है - और हमारा सिर उसी जगह ऊँचा कर दिया है जहाँ हम कभी शर्म से झुक जाते थे।

आज के युवाओं से आप क्या कहना चाहेंगे?

इसे पढ़ रहे सभी युवाओं से: आपके आस-पास हज़ारों लोग हो सकते हैं, लेकिन आप इसे इसलिए पढ़ रहे हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपको चुना है। यह दुनिया आपको गिराने की पूरी कोशिश कर रही है। लेकिन अगर आप प्रभु के लिए जोश के साथ डटे रहेंगे, तो वह आपको इस पृथ्वी पर एक गवाही के रूप में उभारेंगे। उठो और चमको, युवा योद्धा!

प्रिय युवा मित्रों, अगर परमेश्वर भाई गोकुल को पा सके—जो एक धर्मपरायण परिवार में जन्मे, हिंसा में फँसे, दुश्मनों से छिपते हुए—और उन्हें पास्टर गोकुल जोसेफ में बदल सके, तो वह आपके लिए भी ऐसा ही कर सकते हैं। अगर आप अपना हृदय यीशु के लिए खोल दें, तो वह आपको भी अपनी सन्तान बना सकते हैं। ■

समाचार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से मस्तिष्क की संज्ञानात्मक क्षमता में 47% की गिरावट - चौंकाने वाला अध्ययन

हाल ही में हुए एक अध्ययन से एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है, जो दर्शाता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करने वाले व्यक्तियों की संज्ञानात्मक क्षमता में 47% की गिरावट आई है। यह शोध अमेरिका के कैम्ब्रिज स्थित प्रतिष्ठित निजी विश्वविद्यालय, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT) द्वारा किया गया था, जो विशेष रूप से ChatGPT के उपयोगकर्ताओं पर केंद्रित था।

चार महीनों तक किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि जो लोग नियमित रूप से ChatGPT का उपयोग करते हैं, उनके मस्तिष्क की सोचने और जानकारी को संसाधित करने की क्षमता में 47% की कमी देखी गई। उदाहरण के लिए, कई उपयोगकर्ता कुछ मिनट पहले लिखे गए वाक्य को याद नहीं कर पा रहे थे। इसके विपरीत, जिन लोगों ने AI की सहायता के बिना लिखा, उनमें यह समस्या नहीं देखी गई।

— दिनाकरन, 5 अगस्त, 2025

भारत ने एक ही दिन में ₹70.70 करोड़ लेनदेन के साथ नया UPI रिकॉर्ड बनाया!

भारत ने यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) के माध्यम से डिजिटल लेनदेन में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। 2 अगस्त को एक ही दिन में ₹70.70 करोड़ मूल्य के लेनदेन हुए, जैसा कि भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने पुष्टि की है। यह देश भर में यूपीआई के उपयोग का एक नया रिकॉर्ड है।

2023 की तुलना में, यूपीआई लेनदेन की संख्या अब दोगुनी हो गई है। दैनिक लेनदेन की मात्रा, जो पहले ₹35 करोड़ थी, अगस्त 2024 तक बढ़कर ₹50 करोड़ हो गई। और अब, यह बढ़कर ₹70 करोड़ हो गई है। अकेले जुलाई में, दैनिक लेनदेन लगभग ₹65 करोड़ थे, लेकिन 2 अगस्त को यह पहली बार ₹70 करोड़ के आंकड़े को पार कर गया।

गूगल पे, फोनपे, पेटीएम, अमेज़न पे और भीम जैसे लोकप्रिय डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म ने इस उछाल में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यूपीआई उपयोगकर्ताओं की संख्या और लेनदेन की मात्रा हर दिन बढ़ रही है, जो भारत के वित्तीय परिदृश्य में तेजी से हो रहे डिजिटल परिवर्तन को दर्शाती है। - दिनाकरन, 6 अगस्त, 2025

कोई इन्सान नहीं मेरे दोस्त

हैलो मित्रों,
आप सब कैसे हैं? आशा है आप सकुशल होंगे! इस लेख के माध्यम से एक बार फिर आपसे जुड़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

उपासना में आदर्श

हाल के दिनों में, मसीही युवाओं के बीच सबसे ज़्यादा प्रचलित बातों में से एक आराधना है। आज के संदर्भ में, आराधना अक्सर ऊर्जावान संगीत और भावपूर्ण नृत्य के मिश्रण के रूप में दिखाई देती है। दुर्भाग्य से, परमेश्वर की उपस्थिति से ऊपर भावनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है।

हालाँकि, परमेश्वर के वचन के अनुसार, हमें एक विशिष्ट तरीके से आराधना करने के लिए कहा गया है। पूरे पवित्रशास्त्र में, हम देखते हैं कि आराधना में नृत्य करना एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है, न कि सामूहिक आदर्श। परमेश्वर के प्रिय बच्चों, बाइबल हमें पवित्रता की सुंदरता में प्रभु की आराधना करने के लिए प्रोत्साहित करती है। तो, हमारा हृदय कहाँ खड़ा है? हमारे कार्य हमारी आराधना को कैसे दर्शाते हैं?

केवल इसलिए नाचना कि हर कोई नाच रहा है या सांसारिक तौर-तरीकों का अनुकरण कर रहा है, सच्ची आराधना नहीं है। आराधना में, भावनात्मक उत्तेजना पर पवित्रता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

आमोस की पुस्तक में, हम परमेश्वर को यह कहते हुए पढ़ते हैं, "अपने गीतों का कोलाहल मुझसे दूर रखो!" इससे स्पष्ट है कि केवल वही आराधना प्रभु को स्वीकार होती है जो उन्हें प्रिय हो। बाकी सब कुछ, चाहे वह हमें कितना भी ज़ोरदार या हार्दिक क्यों न लगे, अगर उसमें ईमानदारी और पवित्रता का अभाव है, तो वह प्रभु के कानों में एक परेशान कर देने वाले शोर की तरह लगेगा।

प्रिय मित्रों, हम प्रभु की आराधना कैसे कर रहे हैं? क्या हम पूरे मन और आत्मा से कर रहे हैं? ज़रा सोचिए!

सच्ची आराधना परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा लाती है। इसका मूल स्वर्ग में है, जहाँ करूब और साराप निरंतर "पवित्र, पवित्र, पवित्र!" पुकारते हुए प्रभु की स्तुति करते हैं।

लूसिफ़र स्वर्ग में आराधना का नेतृत्व करने वाला पहला व्यक्ति था। लेकिन जब घमंड ने उसे पतन की ओर धकेला, तो उसने लोगों के बीच झूठी आराधना के बीज बोने शुरू कर दिए—ऐसी आराधना जो परमेश्वर को प्रिय नहीं है। इसलिए मित्रों, सतर्क रहें! क्या हम उचित आराधना कर रहे हैं? क्या हम सचमुच परमेश्वर को वह उचित आराधना दे रहे हैं जो वह चाहता है? ये ऐसे प्रश्न हैं जिन पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए।

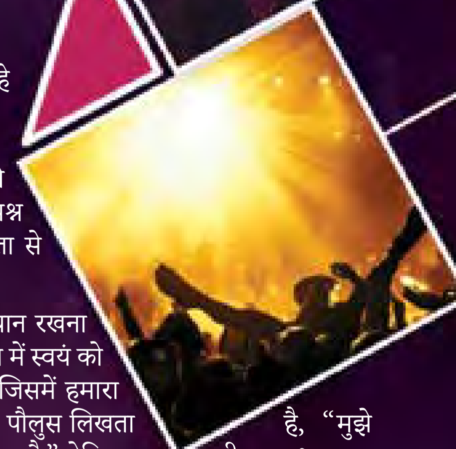

हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हम आराधना में स्वयं को कैसे प्रस्तुत करते हैं—जिसमें हमारा पहनावा भी शामिल है। पौलुस लिखता है, "मुझे कुछ भी करने का अधिकार है," लेकिन हर चीज़ लाभदायक नहीं होती। जब हम आराधना करते हैं, तो हमारा आचरण, हमारी बातचीत, हमारा पहनावा - सब कुछ पवित्रता के अनुरूप होना चाहिए। अगर हम आराधना करते समय ऐसे तरीके अपनाते हैं जो भ्रम पैदा करते हैं या दूसरों को प्रलोभन में डालते हैं, तो वह परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली आराधना नहीं है।

अगर हम वह बोलते हैं जो प्रभु ने नहीं कहा है या जो मन में आता है उसे गाते हैं, यह सोचकर कि यह आराधना है, तो वह सच्ची आराधना नहीं है। केवल तभी जब सिर्फ प्रभु का नाम महिमान्वित होता है, आराधना अपनी पूर्णता को प्राप्त करती है।

मेरे प्रिय मित्रों, हम अपनी युवावस्था में जो आदतें विकसित करते हैं, वही हम अंततः अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। इसलिए आइए हम अभी से ही परमेश्वर की आराधना में सच्चे और सच्चे रहें। आराधना हमारे बीच परमेश्वर की उपस्थिति को आमंत्रित करती है - लेकिन अगर यह सही तरीके से नहीं की जाती है, तो यह उनके क्रोध को भी आमंत्रित कर सकती है।

आइए हम मूल्यांकन करें कि क्या हमारी आराधना परमेश्वर के वचन के अनुरूप है या केवल मानव निर्मित परंपराओं का पालन कर रही है। आज से, आइए हम अपनी प्रवृत्ति बदलें - आइए हम उन चीजों को त्याग दें जो परमेश्वर को नापसंद हैं और ऐसी आराधना को अपनाएँ जो उनकी दृष्टि में प्रसन्न करती है। परमेश्वर हमसे यही अपेक्षा करते हैं।

आइए हम पवित्रता से उसकी आराधना करें, और हम अलौकिक दर्शन देखेंगे, परमेश्वर की योजनाओं को समझेंगे, और उसके साथ गहरी संगति में चलेंगे।

प्रभु आपको भरपूर आशीष दें। आमीन!